P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-11*(Part-2) February 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

हिन्दी तोड़ने वाली नहीः जोड़ने वाली भाषा है

सुशील कुमार
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा,
धारवाड़, कर्नाटक, भारत

सारांश

हिन्दी भाषा और उसकी राष्ट्रीयता, उसकी सामाजिकता और उसके जुड़ाव आदि पर विचार करते हुए इस आलेख में हिन्दी के प्राचीन और नवीन संदर्भों को सुलझाव की दृष्टि से देखा गया है। आजादी के कुछ समय पूर्व से लेकर स्वाधीनता संग्राम के समय तक तथा उसके पश्चात् आज तक हिन्दी की विभिन्न दशाओं और दिशाओं का अध्ययन किया गया है। इसी संदर्भ में राष्ट्रभाषा के प्रश्न को भी बहुत ही शिद्दत के साथ सुलझाने का गंभीर प्रयास किया गया है। साथ ही साथ आज देश की जो स्थिति है उसे हिन्दी की भारतीयता, राष्ट्रीयता और चेतना से जोड़ कर देखा गया है।

मुख्य शब्द : राष्ट्रभाषा, चेतना, ऊर्जस्वित, राष्ट्र–निर्माता, शिक्षक की भूमिका, हिंग्लिस।

प्रस्तावना

सोने की चिड़िया कहा जाने वाला भारत देश जहां अंग्रेजी हुकूमत ने वर्षो तक अपनी नींव जमाएं रखी तथा साथ ही जन–जन को अपनी अंग्रेजी भाषा का भी गुलाम बनाएँ रखा। आज 21वीं शताब्दी में आमजन की भाषा हिन्दी भाषा ने अंग्रेजी भाषा की दोहरी मानसिकता को तोड़कर विश्व में जन–जन में बोली जाने वाली भाषा का वर्चस्व हासिल कर लिया है। अंग्रेजी भाषा का प्रतिरोध न करते हुए आज यही हिन्दी भाषा विश्व के कोने–कोने में बोली जा रही है, इसलिए हिन्दी भाषा को तोड़ने वाली भाषा न कहकर बल्कि जोड़ने वाली भाषा कहना चाहिएं। **एक** भाषा ही ऐसा तत्व है जो जीवन में हमें **एक** दूसरे के साथ मिलकर सद्भावनापूर्वक, एकता, प्रेम और भाईचारे के साथ रहना सिखाती है। यह बात हम सब भली–भांति जानते है कि भारत में वर्षो से ही अनेक भाषाओं का प्रयोग होता आ रहा है। इनमें अंग्रेजी को छोड़कर सभी भाषाएँ हिन्दी की सहयोगिनी रही है और उनकी आत्मा भी हिन्दी की तरह ही भारतीय रही है। 'एक भाषा की सबसे बडी ताकत उस भाषा को बोलने, एवं आपसी व्यवहार में लाने वाला समाज ही होता हैं।'[1] हमें यह समझना होगा कि किस प्रकार हिन्दी भाषा हमें एक दूसरे के साथ जोड़ने का काम कर रही है। आज जबकि मैं हिन्दी भाषा में 'स्वतंत्रता के पश्चात् हिन्दी के विकास में हिन्दी प्रचार संस्थाओं का योगदान' जैसेः– 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास', 'हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला', 'हिन्दी प्रचार–प्रसार संस्थान, जबलपुर', 'कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, बेंगलुरू', 'केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरूवनंतपुरम', 'गुजरात विद्यापीठ, गुजरात', 'गुजरात प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, अहमदाबाद', गोवा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, मडगांव', 'श्रीमध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति, इंदौर', 'अखिल भारतीय हिन्दी सेवा समिति, जबलपुर', 'मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपाल', 'साहित्यिक सांस्कृतिक शोध संस्था, मुम्बई', 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा', 'अखिल भारतीय साहित्य परिषद् आदि जो समस्त भारत की संस्था है, में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। ये प्रमुख हिन्दी सेवी संस्थाएँ हिन्दी भाषा के लिए अनेक वर्षो से प्रचार–प्रसार का कार्य कर रही है, जिनके सकारात्मक सहयोग से आज हिन्दी भाषा भारत ही नही विदेशों में भी अपना वर्चस्व सिद्ध कर रही है। इन हिन्दी सेवी संस्थाओं ने भारत देश की गुलामी से लेकर स्वतंत्रता के बाद से भी निरंतर हिन्दी भाषा के माध्यम से जन–जन को जोड़े रखने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। यहाँ यह कहना बिल्कुल सही होगा कि एक भाषा लोगों को जोड़ने का काम करती है जब वें लोग आपस में जुड़ जाएगें तो वह देश भी अपने आप ही जुड़ जाएगा। यह कार्य आज हिन्दी भाषा ने भारत देश को जोड़ने के साथ–साथ पूरे विश्व को अपने साथ जोड़ लिया है, इसलिए हिन्दी भाषा तोड़ने वाली नही बल्कि जोड़ने वाली भाषा है। लेकिन यहाँ अफसोस की बात यह है कि पूरे विश्व को यथाशक्त एवं यथासंभव एकता, सहयोग, भाईचारा एवं बंधुता के सूत्र में जोड़ने वाली, विश्व के 117 देशों

में पढ़ने व पढ़ाई जाने वाली यह भाषा सन् 1947 के बाद से आज तक राष्ट्रभाषा का दर्जा अपने ही देश में प्राप्त न कर सकी। यह हम सब लोगों के लिए बहुत ही लज्जा की बात है। ''भोर होने से पहले उठने वाला तथा दिन–रात मेहनत करने वाला व्यक्ति जब अपने भाग्य को कोसता है, आज वह दशा हिन्दी भाषा की हो चुकी है जो बोली तो जन–जन के मुख से जाती है, लेकिन इसे राष्ट्रभाषा का दर्जा आज तक प्राप्त क्यों नही हो सका?''[2] पीएचडी के संदर्भ में मैं जहाँ–जहाँ गया उन सभी हिन्दी सेवी संस्थाओं के साथ–साथ आज यह भाषा मनोरंजन जगत् , वाणिज्य, पर्यटन और संस्कृति, प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग मुद्रित जनसंचार माध्यम, हिन्दी विज्ञापन लेखन, भाषा प्रबंधन, हिन्दी राजभाषा आयोग, दृश्य–श्रव्य माध्यमों द्वारा, हिन्दी शिक्षण आदि के माध्यमों से हिन्दी भाषा जन–जन से जुड़कर दिन–प्रतिदिन चेतना प्रदान कर रही है। 'आज हिन्दी भाषा ने विश्व में जन–जन में ऐसी स्थिति पैदा कर दी है कि आज विश्व के अधिकांश देशों में अपने विशिष्टता के कारण ऐसी स्थिति पैदा कर दी है कि अनेक लोग भारतीय धर्म, दर्शन, जीवन–शैली आदि को जानने के लिए हिन्दी भाषा सीख और पढ़ रहे है।''[3] मुझे यहां एक बात कहनी पड़ रही है कि भारत के जन–जन की भाषा हिन्दी आज तक राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त नही कर सकी लेकिन इसके बाद भी मेरा ऐसा मानना है कि हिन्दी भाषा को एक दिन राष्ट्रभाषा से भी बढ़कर भविष्य में अन्तर्राष्ट्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त होगा वह दिन शायद अब दूर नही है।

'आज आमजन को हिन्दी भाषा की ताकत को समझना होगा जिसके बाद ही आमजन सच्चे अर्थो में भाषाओं की दोहरी मानसिकता से मुक्त हो पाएगा।'[4] आज हिन्दी भाषा का अध्ययन एवं अध्यापन भारत ही नही बल्कि विश्व के कोने–कोने में हो रहा है। आज हिन्दी भाषा का पठन–पाठन भारत ही नही विश्व के सभी प्रमुख विश्वविद्यालयों में हो रहा है। आज हिन्दी विश्व की उन भाषाओं में से एक है जिसमें साहित्य का सृजन न केवल भारत बल्कि विश्व के अनेक देशों में रह रहे भारतीय तथा विदेशियों द्वारा हो रहा है। जैसे सूरीनाम, मॉरिशस, त्रिनिदाद आदि देशों में उदात्त चिंतन के साथ श्रेष्ठ हिन्दी साहित्य की रचना हो रही है। 'विश्व की सबसे समृद्ध भाषा के रूप में आज हिन्दी भाषा अपनी पहचान बना चुकी है।'[5] एक भाषा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के चरित्र को प्रकट करती है। एक भाषा के बिना किसी समाज का सामूहिक अस्तित्त्व संभव ही नही है। किसी भी भाषा का प्रचार–प्रसार किन्ही नियमों का मोहताज नही होता है। भाषा लोक द्वारा प्रयुक्त होती है और लोकमानस के हर आयाम से जुड़ी होती है। किसी भी व्यक्तित्त्व का उत्थान शिक्षा से ही होता है और शिक्षा के द्वारा ही मानवीय मूल्यों की स्थापना भी होती है। आज सम्पूर्ण भारत में अंग्रेजी माध्यम की शिक्षण संस्थाएं कुकुरमुत्तों की भांति फैलती जा रही है। यहाँ मेरा उद्देश्य अंग्रेजी भाषा की आलोचना करना नही है। मेरा यहाँ कथन यह है कि भारत देश को आजादी मिलने के बाद भी हमारी वाणी या हमारी हिन्दी भाषा या जन–जन की भाषा हिन्दी भाषा आखिरकार आज आम–जन से लुप्त क्यों होती जा रही है? एक राष्ट्रभाषा के बिना कोई भी राष्ट्र गूंगा कहा जाता है, आज हमारी स्थिति वही है। क्यों हम धीरे–धीरे मूक होते जा रहे हैं? जिस अंग्रेजी और अंग्रेजियत की सत्ता को इसी भारतीय मिट्टी ने खदेड़ कर अपनी आजादी को हासिल किया था, उसी मिट्टी से जुड़ा हुआ आम भारतीय जन आज उसी भाषा और उसकी संस्कृति से वंचित होता जा रहा है, क्यों विदेशी भाषा अंग्रेजी से अत्यंत प्रभावित होकर धन्यता का अनुभव कर रहा है। अगर अपनानी ही थी तो अपनी भाषा को अपनाते जिसने आज जन–जन के साथ पूरे विश्व को आपस में जोड़ दिया है। जहां तक प्रश्न भाषा व साहित्य के अध्ययन एवं अध्यापन ज्ञानार्जन, आदि का है, यहां हिन्दी भाषा का विरोध अंग्रेजी भाषा से नही है। हमारा विरोध है तो बस अंग्रेजियत से है जो हमारे व्यक्तित्त्व को उठने, चलने, आगे बढने, उसे जानने–समझने के साथ–साथ अपने व्यक्तित्त्व या अपनी जिंदगी और भारतीय साहित्य की अवधारणा आदि को जानने का अवसर ही प्रदान नही करती है। यह बात तो हम सब भली भांति जानते है कि दीया तले ही अंधेरा होता है। आज हिन्दी भाषा भी इस दीये की भांति बन गई है। अंग्रेजी शब्दों को लेकर जो नई हिन्दी आज तैयार हो रही है वह हिन्दी की अधोगति है। हास्य और व्यंग्य में अंग्रेजी–हिन्दी मिश्रित भाषा को 'हिंग्लिस' कहा जाने लगा है। लेकिन कोई भी भाषा अन्य भाषाओं से यथोचित आदान–प्रदान करके ही आगे बढती है। जैसे विचारों की कोई सीमा नही होती उसी प्रकार शब्द भी यात्राएं करते है। उनकी भी कोई सीमा नही है। यह बात सत्य है कि जब तक किसी भाषा में अन्य भाषाओं के शब्दों का यथासमय और यथोचित आगम नही होगा तब तक वह भाषा समृद्ध नही हो सकती। एक भाषा और राष्ट्र दोनों मिलकर हमें ऊर्जस्वित करते है। आज हिन्दी राष्ट्रीय ही नही बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक बन गई है। हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने में सबसे ज्यादा योगदान महात्मा गांधी जी का रहा है। अब इस भाषा को अन्तर्राष्ट्रीय भाषा का दर्जा दिलाने के लिए जन–जन को अपना अप्रतिम योगदान देना होगा और इसके लिए शिक्षा में प्राइमरी स्तर से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक के मानवीय अध्यापकों और आचार्यों की बहुत बड़ी भूमिका समझनी पड़ेगी। ' यहां यह कहना उचित होगा कि यदि भारत देश के ह्रदय को पहचानना है तो उससे पहले हिन्दी भाषा का ज्ञान अत्यंत आवश्यक है।'[6] अध्यापक का सबसे बड़ा विशेषण होता है 'राष्ट्र–निर्माता'। राष्ट्र के निर्माण में भाषा उसका साहित्य, उसकी राष्ट्रीय चेतना, उसका सामाजिकरण आदि का अध्यापन, विद्यार्थियों को इस प्रकार से किया जाये ताकि विद्यार्थी पहले स्वंय को भारतीय समझें और इसके बाद कुछ ओर।

अध्ययन का उद्देश्य

साहित्य के समसामयिक प्रश्नों एवं समस्याओं पर एक तटस्थ चिंतन।

निष्कर्ष

हिन्दी ही हमारी एकता, सामाजिकता, राष्ट्रीय चेतना, आपसी भाईचारा, सर्वधर्म सद्भाव को अपनाते हुए जात, वर्ग, सम्प्रदाय, प्रांतीयता आदि विभिन्न बुराइयों से

ऊपर उठकर लोकतंत्रीय भारत को पुनः उजागर करने के लिए और हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलवाने के लिए हम सभी को प्रयत्न करना चाहिए, इस बात पर जोर दिया गया है क्योंकि राष्ट्रभाषा हिन्दी ही हमारा स्वाभीमान है।

अंत टिप्पणी

1. *हिन्दी की विकास यात्रा, डॉ0 क्षमाशंकर पाण्डेय, हिन्दी की विकास यात्रा और हिन्दी सेवी संस्थाए, विभूति मिश्र, प्रथम संस्करण–सन् 2011, पृ0–123*
2. *सुशील कुमार, स्वयंकृत शोधार्थी, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, धारवाड़, कर्नाटक, भारत*
3. *ज.गं. फगरे, भारतीय सभ्यता का प्राण याने हिन्दी, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणे, राष्ट्रभाषा विशेषांक, जयभारती मुखपत्र, सितम्बर–अक्टूबर–2009, पृ0–2*
4. *डॉ0 बद्री प्रसाद पंचोली, हिन्द की भाषा हिन्दी, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणे, पत्रिका, समिति संवाद, अगस्त–सितम्बर–2015, पृ0–30*
5. *हिन्दी भाषा का विकास, डॉ0 प्रेमलता, हिन्दी की विकास यात्रा और हिन्दी सेवी संस्थाए, विभूति मिश्र, प्रथम संस्करण–सन् 2011, पृ0–79*
6. *हिन्दी : राष्ट्रभाषा : राजभाषा :जनभाषा, राजभाषा ही नही :संपर्क भाषा भी ,किताबघर प्रकाशन, 24, अंसारी रोड, दरियागंज,नयी दिल्ली,संस्करण–2002,पृ0–60*